(Q1) मुद्रा क्या है? इसके उद्भव एवं कार्यों का वर्णन करें?

उत्तर

मुद्रा का प्रयोग उस काल में होता था जिसके लिखित प्रमाण आज उपलब्ध नहीं है किन्तु एक बात अधिकृत रूप में कही जा सकती है कि पृथक-पृथक रूप में हुआ है। यदि ऐतिहासिक दृष्टिकोण से हम विचार करें तो कह सकते है कि मानव के आर्थिक जीवन के विकास के साथ-साथ ही मुद्रा का विकास हुआ है। इतिहास में उपलब्ध प्रमाण बताते है कि प्राचीन काल में दक्षिण महासागर के क्षेत्र में स्थित टापुओं पर पत्थर की मुद्राओं का प्रचलन था। ऋग्वेद काल में मुद्रा के रूप में गाय का उपयोग किया जाता था। कुछ इतिहासकारो का मानना है कि सिक्कों का सर्वप्रथम प्रयोग लीडिया में ईसा से 600-700 ई० पूर्व हुआ था। ऐतिहासिक दृष्टिकोण से मुद्रा के विकास क्रम को निम्नानुसार किया जाता है:-

(1) वस्तु मुद्रा (commodity money) → मुद्रा विकास के प्रथम चरण में समाज में बहुत अधिक प्रचलित किसी एक वस्तु को विनिमय का माध्यम मान लिया जाता था और उसी के द्वारा विनिमय कार्य किया जाता था। आखेट युग में पशुओं की खाल या चमड़ा, पशु पालन युग में कोई पशु जैसे गाय या बकरी तथा कृषि युग में किसी अनाज को विनिमय का माध्यम मानकर कार्य किया जाता था।

(2.) धातु मुद्रा (metalic money) → मुद्रा के रूप में ताँबा, लोहा, कांसा तथा सोना आदि धातुओं का क्रमिक प्रयोग हुआ है किन्तु अन्य धातुओं की तुलना में सोना एवं चाँदी का मुद्रा के रूप में लम्बे समय तक प्रयोग हुआ।

(3.) पत्र मुद्रा (Paper money) → लेन-देनों में बढ़ती हुई मात्रा तथा धातुओं की मात्रा कम होने तथा इसके अपव्यय के कारण धातु मुद्रा की लोकप्रियता धीरे-धीरे कम होने लगी और पत्र-मुद्रा का प्रयोग तेजी से बढ़ता गया।

(4.) साख मुद्रा → देश के आर्थिक विकास तथा लेन-देन के कार्यों में वर्तमान समय में साख मुद्रा का प्रयोग होने लगा। चैक, बिल इसके उदाहरण है।

Scanned with CamScanner

मुद्रा की परिभाषाओं को अर्थशास्त्रियों ने निम्न प्रकार से दी है।—

कौलबोर्न के अनुसार – " मुद्रा वह है जो मूल्य मापक और भुगतान का साधन है।"

नैप के अनुसार, "— कोई भी वस्तु जो राज्य द्वारा मुद्रा घोषित कर दी जाती है, मुद्रा कहलाती है।"

कीन्स के अनुसार – " मुद्रा वह है जिसको देकर ऋण प्रसंविदाओं तथा कीमत प्रसंविदाओं का भुगतान किया जाता है और जिसके रूप में सामान्य क्रय शक्ति का संचय किया जाता है।" .

✳ मुद्रा के कार्य ;—

(क) प्राथमिक कार्य – मुद्रा के प्राथमिक कार्यों का मुख्य कार्य भी कहा जाता है। इन कार्यों के अन्तर्गत मुद्रा के उन कार्यों को सम्मिलित किया जाता है जो मुद्रा द्वारा प्रत्येक देश में सम्पादित किये जाते हैं। इसलिए मुद्रा के इन कार्यों को मौलिक या आवश्यक कार्य भी कहा है। मुद्रा के दो प्राथमिक कार्य हैं ;—

(i) विनिमय का माध्यम → आधुनिक अर्थव्यवस्था का आधार विनिमय ही है और विनिमय का कार्य मुद्रा द्वारा ही किया जाता है। वर्तमान में मुद्रा सबसे अधिक तरल साधन है।

(ii) मूल्य का मापक → मुद्रा मूल्य मापन की इकाई का कार्य करती है, दूसरे शब्दों में कहा जा सकता है कि मुद्रा द्वारा मूल्य को मापा जा सकता है। वस्तु विनिमय में कोई सामान्य मापदण्ड नहीं था। परिणामस्वरूप विनिमय का मूल्य निश्चित करने में बहुत अधिक कठिनाई आती है। वर्तमान में प्रत्येक वस्तु का मूल्य मुद्रा में मापा जा सकता है।

(ख) गौण या सहायक कार्य → मुद्रा के गौण कार्यों के अन्तर्गत वे कार्य आते हैं जो मुद्रा के प्राथमिक कार्यों की सहायता से किये जाते हैं। इसलिए इन कार्यों को मुद्रा का सहायक या गौण कार्य कहा जाता है। मुद्रा के तीन गौण कार्य हैं ;—

P.T.O

Scanned with CamScanner

(i) स्थगित भुगतान का मान → जिन लेन-देनों का भुगतान तत्काल न करके भविष्य के लिए स्थगित कर दिया जाता है उन्हें स्थगित भुगतान कहा जाता है। मुद्रा के इस कार्य के फलस्वरूप ही घरेलू एवं अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का विकास संभव हो सका है,

(ii) मूल्य का संचय → मनुष्य की यह प्रवृत्ति है कि वह अपनी वर्तमान आय में से कुछ बचाकर भविष्य के लिए संचित करके रखना चाहता है, ताकि वह अपनी भावी आवश्यकताओं को सरलता से पूरा कर सके, किन्तु यह कार्य उसी स्थिति में संभव है जब बचत करने वाले व्यक्ति को यह विश्वास हो कि उसके द्वारा की गयी बचत पूर्ण रूप से सुरक्षित रहेगी।

(iii) मूल्य का हस्तान्तरण → मुद्रा विनिमय का एक तरल साधन है। अतः मुद्रा द्वारा मूल्य अथवा क्रय शक्ति का हस्तान्तरण बहुत सरलता से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को और एक स्थान से दूसरे स्थान को किया जा सकता है। इस प्रकार वर्तमान समय में मुद्रा-मूल्य के हस्तान्तरण का सर्वोत्तम साधन बन गयी है,

(3) आकस्मिक कार्य → प्राथमिक तथा गौण कार्यों के अतिरिक्त मुद्रा के कुछ आकस्मिक कार्य भी है जो निम्न हैं:—

(i) साख का आधार
(ii) सामाजिक आय के वितरण का आधार
(iii) अधिकतम संतुष्टि एवं उत्पादन का आधार
(iv) पूँजी की तरलता - गतिशीलता में सहायक
(v) शोधन क्षमता की गारण्टी
(vi) निर्णय की वाहक

— o —

Scanned with CamScanner